समकालीन हिन्दी और बोड़ो कविता की अभिव्यक्त विविध स्वरः एक तुलनातमक अध्ययन

2

जयन्त कुमार बोरो*

आलेख सार

नई कविता के उपरांत कविता बडी तूफानी दौर से गुजरी। अनेक आंदोलन कविता के क्षेत्र में हमारे सामने आए यथा– नूतन कविता, समसामयिक कविता, अकविता, अभिनव कविता, सहज कविता युयुत्सावादी कविता, अस्वीकृत कविता आदि। नाम चाहे जो भी दिया जाए, कविता अपने मूल में तब तक कविता है जब तक वह जीवन और परिवेश को संवेदना के धरातल पर अनुभव करके शिल्पगत सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त करती है। कविता जीवन की व्याख्या है अतः वह जिंदगी के तमाम फलसफे को अपने भीतर समेटे रहती है।

बोड़ो भाषा एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचयः

बोड़ों भाषा के विभाजन के अन्तर्गत बोड़ो–कचारी (असम), दिमासा–कचारी (वर्तमान दिमापुर, नागालैंड में), राभा (असम में), गारों (वर्तमान मेघालय के पश्चिमी गारों पहाड़ी में) तिवा, तिपरा, चेतिया, कोच (कोच राजवंशी), हाजंग, कारबी आदि असम प्रांत की जनजाति एवं उनकी बोलियां हैं। साधारणतः बोड़ो कचारी वाले बोड़ो भाषा को ही बोलचाल के रूप में असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल आदि प्रांतों में तथा विदेशों में नेपाल, भूटान, बाग्लादेश आदि में बोला करते हैं। सन् 1971 की जनगणना के अनुसार पूरे असम प्रांत में बोड़ो भाषा बोलने वालों की संख्या लगभग 6 लाख थी। यह बोड़ो जनजाति असम में पश्चिमी धुबरी से लेकर लखिमपुर जिले के उत्तर के पूर्व तक फैला हुआ है। असम में इसकी विभिन्न स्थानीय बोलियां हैं जिनमें प्रत्येक जगह पर कुछ न कुछ अंतर पाया जाता है जैसे–

1. कोकरझार और धुबरी में एक समान रूप से उच्चारण किया जाता है।
2. गोवालपारा और दक्षिण कामरूप में एक समान उच्चारण किया जाता है।
3. उत्तर कामरूप

**असि0 प्रो0, हिन्दी विभाग, कांकराझार सरकारी महाविद्यालय, कांकराझार, असम*

4. दारंग

5. नोगांव और कारबी आंगलंग में अलग अलग उच्चारण की विशेषताएं पायी जाती है। बोड़ो भाषा की अपन निजी लिपि नहीं थी। सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी के अंत में ईसाई मिसनरियों ने रोमन लिपि का प्रयोग कर उनकी धार्मिक पुस्ताके का अनुवाद करवाया और पाठ्यपुस्ताके को भी तैयार करवाया।

बीसवीं सदी के तृतीय दशक तक बोड़ो लेखकों ने पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रणयन करने के दृष्टिकोण से असमीया को प्रयोग में लाया। प्रथम बोड़ो पत्रिका बिबार का सम्पादन सन् 1924 में सतीश चन्द्र बसुमतारी द्वारा किया गया। प्रथम बोड़ो पुस्तक बोरोनि शिवसा आरो आरोज, 'मधुराम बोड़ो' द्वारा लिखा गया।

सन् 1952 तक बोड़ों पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन बड़ा अनियमित रहा। इसी समय बोड़ो साहित्य संगठन का जन्म हुआ। जिसके चलते बोड़ो पुस्तकों एवं पत्रिकाओं तथा स्मृति लेखों आदि का प्रकाशन काफी हद तक नियमित होने लगा।

सन् 1963 में प्राथमिक स्तर की पढ़ाई के लिए बोड़ो भाषा को माध्यम बनाया गया। जिस कारण काफी हद तक नियमित रूप से पुस्तकों का प्रकाशन होने लगा। सन् 1975 तक विद्यालयों में पठन–पाठन के लिए असमिया लिपि को प्रयोग में लाया जाता रहा। परन्तु सन 1976 में असमिया लिपि के स्थान पर देवनागरी लिपि को लाया गया तथा भाषा को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया गया। साथ ही साथ देवनागरी लिपि के द्वारा बोड़ो माध्यम से स्कूली शिक्षा भी प्रारम्भ की गयी।

साहित्यिक कार्य के प्रथम सोपान में बोड़ो लोक साहितय उन्नत रूप में हमारे सम्मुख आता है। द्वितीय सोपान में विशिष्ट साहित्यिक कार्य के रूप में इसाई मिशनरियों द्वारा धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद कार्य जो उस मसय प्रारमी करवाया गया। बीसवीं शताब्दी के तृतीय दशक तक बोड़ो विद्वानों द्वारा क्लासिक साहित्य का शुभारंभ हुआ।

सन 1963 से बोड़ो भाषा को आधुनिक काल का प्रारम्भ होता है। जब शिक्षण के लिए बोड़ो भाषा को माध्यम के रूप में प्रमाणित कराया गया। अब धीरे–धीरे बोड़ो भाषा और साहित्य निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ जा रहा है।

समकालीन हिन्दी और बोड़ो कविता की अभिव्यक्तियां

समकालन कविता अपने युग एवं परिवेश से सम्पृक्त है। इस कविता में हम अपने को देख सकते हैं। हमारी आशा–निराशा, आकांक्षा–अपेक्षा, राग–विराग,

हर्ष–विवाद सब उसमें समाये हुये हैं। उत्तरोत्तर कठिन होती जा रही रातनितिक अव्यवस्था, जीवनयापन, सामाजिक विकृतियां, खोखले सिद्धांत आदि सबको समकालीन कविता में समेटा गया हैं। समकालीन कविता का स्वर व्यंग्य या आक्रोश से भरा हुआ है। उसमें बौद्धिकता की प्रभूत मात्रा है। समकालीन कविता में चित्रित मानव जिन तनावों विसंगतियों एवं कुण्ठाओं को लिए हुए जी रहा है वे पूर्णत यर्थाथ है। जो स्वत्रंत्रता से पहले की कवि की तुलना में सपाटबयानी अधिक है। समकालीन कवित उस मोहभंग को दर्शातीहै जो स्वतंत्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुई थी। आज हमें लगता है कि हम पूरी तरह ठगे हुए हैं। नेताओं के वादे खोखले साबित हुए। सबको घर में रोशनी और खुशहाली का वादा किया गया था, पर यर्थाथ में हम पूरे शहर में चिराग तक नहीं जला सकेः

कहां तो तय था कि चिरागां हरेक घर के लिए।
कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।।

अकाल, बेरोजगारी, भूखमरी, जातिवाद, भाषावाद, धार्मिक संकीर्णता और साम्प्रदायिकता दंगों ने हमारे आदर्श की पोल खोल दी। समकालीन कविता इन सब पर अपनी वेबाक टिप्पणी करता है। आजादी से उसका मोह भंग हो गया है। समकालीन कविता अपने युग, अपने समय से पूरी तकर सम्पृक्त है। धूमिल अपने समय के व्यवस्था, व्यवस्था में जीने वाले आदमियों तथा उस व्यवस्था पर पलने वाले शोषकों तीनों को अपनी कविताओं में समेटते हैः

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी हे
जो न रोटी बेलता है
न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूं यह तीसरा आदमी कौन है
मेरे देश की संसद मौन है

समकालीन कवियों ने स्वार्थलुप कुर्सी प्रेमी नेताओं पर बेबाकी टिप्पणियां की हैं। ये नेता जनता को खिलौना समझते हैं और अपना उल्लू सीदा करने के लिये हमारा उपयोग करते रहते है। समकालीन कविता अपने देश काल से पूरी तरह जुडी हुई है। चारों ओर फैली भयावह स्थितियों, भूखी नंगी जनता की परेशानियों एवं

शासक की लापरवाही सब कुछ को वह अपने काव्य में समेटता है। वह कहता है कि दिल्ली की संसद में बहस चल रही हैं कि भूखी जनता को रोटी मिलनी चाहिए, किंतु किसी भी बहस से किसी का पेट नहीं भरता। हमें बस सब्र करने के लिए कह देते हैं। आज का आदमी बौना हैं हा व्यक्ति अधूरा है। जीवन एक निरूददेश्य गोरखधंधा दिखाई पड़ता है। इस स्थिति को देखने वाला कवि कह उठता है–

जिंदगी का कोई मकसद नहीं है।
एक भी कद आत आदमकद नहीं है।।

समकालीन कविता का क्षेत्र हमारे आस–पडोस का परिवेश है। आज की कविता सहज, धारादार एवं प्रभावशाली है और वह आम आदमी की भाषा में कहीं गई है। इसकी प्रहारक व्यंग्यात्मक है और साथ ही साथ सार्थक भी है। समकालीन कविता में जो काल संसक्ति है उसका अभिप्राय है–समय की गति से यथासंभव चलना। इस कविता ने यहीं किया है स्वयं को समय के साथ बदला है। आज के कवि आम आदमी के परिवेश एवं मानसिकता को अभिव्यक्त कर रहे हैं। इन कवियों में प्रमुख है– धूमिल, दुष्यंत कुमार, रघुवीर सहाय, कुंवर नारायण, लीलाधर जुगड़ी, चंद्रकांत देतवाले, बलदेव वंशी, श्याम विमल, वेणुगोपाल आदि। परंतु 21वीं सदी के प्रथम दशक के कवियों में डा0दिनेश कुशवाह का नाम जोड़ देने में कोई आपत्ति नहीं होगी। दिनेश कुशवाह जी की कविता अपना घर फूंकने का विकल्प आज भी खुला है, मे लोकतंत्र पर प्रहार किया गया है। जो यर्थाथ जान पड़ता है–

जाति–धर्म सत्ता के जो थे सरताज
वहीं है आज भी
कुशवाह जी कहा है आप
जाइए कामरेड ज्योति बसु पुछिए कि
उनके मंत्रिमंडल में युगों तक
मंत्री क्यों नहीं बना एक भी चर्मकार
और इंदिरा सोनिया से पुछिए कि
उनके यहां बना भी तो
चमटोल का क्या बना दिया।

वहीं दूसरी ओर समकालीन बोडो कवियित्रि रूपाली सोरगियरि वर्तमान समय की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रहार करती नजर आती है। हिंदी भाषा के कवियों के साथ–साथ बोडो कवि एवं कवियित्रियां भी हाथ मिलाती हुई नजर आती

हैं। भारत वर्ष की व्यवस्था इतनी खराब हो गई है कि लोगों को पहचानना मुश्किल हो गया है। बोडो कवियित्री रूपाली सारगियारि जी अपनी कविता चुनाव में राजनैतिक व्यवस्था की चुनाव की कालिमा को उकेडने का प्रयास किया है–

चुनाव तुम आते हो, चले जाते हो
मुठठी भा लोगों को
दिला देते हो राज सिंहासन
मौका दे देते हो रंगीन जीवनयापन का।

चुनाव के पूर्व किये गये जनता से वादे, वादे ही रह जाते हैं। दलितों के प्रति सहानुभूति दिखाने चाले शतरंज के खिलाड़ी उन्हें मुठठी भर अनाज के मोहताज बनाकर छोड़ देते हैं। उनकी स्थिति चुनाव पूर्व जैसी थी वैसी ही रह जाती है–

लेकिन उन लोगों में कोई परिवर्तन नहीं होता
वे रह जाते हैं जैसे थे वैसे ही
जो मुठठी भर अनाज के लिए
मृत्यु के गोद में समा जाते हैं

रूपाली जी को हमने एनकी कविताओं में समकालीन समय की विद्रपताओं को चित्रित करते हुए पाया है तथा अपनी कविता को समय के साथ जोड़ने का भी प्रयास किया है। समकालीन कविता हमें मूल्यों का भी बोध कराती है। यह समकालीन कविता एक बड़ी खासियत है।

मूल्य व प्रतिमान हैं जो मानव व्यवहार को नापते हैं। समाज में मानव जीवन और पारस्परिक व्यवहार के संबंध में कुछ धारणांए होती हैं। ये ही धारणाएं स्थिर होकर मूल्य बन जाती है। मूल्य समाज की रीढ़ होते हैं। जिसके सहारे समाज अपना अस्तित्व बनाए रखता है।

किसी समाज की संस्कृति का ज्ञान उस समाज में प्रचलित मूल्यों के आध ाार पर ही संभव है। मूल्यों का विकास समाज के साथ–साथ होता है और समाज विघटन के साथ विघटित हो जाते हैं। यह मूल्य संक्रमण अनवरत चलता रहता है।

वर्तमान समाज की पहले की अपेक्षा वीहड़ सरंचना का समाज है। इसी कारण परिवर्तित युग संदर्भों में मानव सारहीन, निष्प्रयोजन, गरिमाविहीन, नकारा, निरर्थक और मासं पिण्ड घोषित किया जा चुका है। चूंकि मूल्यों का विकास मानव के व्यक्तित्व के साथ्ज्ञ होता है।

इसी कारण क्षरित, जर्जरित, निरूपयोगी और नकारा बनाए गये जीवन

मूल्य विकसित हुए। याद रखना होगा कि मूल्य संबंध सापेक्ष्य होते है। जिसको युग और काल के संदर्भ में साहित्य में देखा जा सकता है कि आज इंसानियत पर संकट के बादल घिरे है इसलिए किसी कवि ने कहा है कि आदमी चारों तरफ, हर देश, ही प्रांत में है परंतुः

आदमी इधर भी है उधर भी है
पर हर जगह इंसान ही परेशान है।

उदात्त मूल्यों की विनाशक प्रवृत्ति और अमानुषिक, बर्बर प्रवृत्ति का उन्मेष आज का सच बन गया है। इस परिवर्तित परिवेश में कविता की जिम्मेदारियां बढ़ गई हैं। प्रत्येक कवि को अपनी जिम्मेदारियों को नये सिरे से निभाने का समय आ गया है। समकालीन कवि राजेन्द्र रघुवंशी जी अपनी कविता ज्ञान–पिपासा में लिखते है कि

मेरी ज्ञान पिपासा अब व्याकुल हो उठी है,
देख रही विज्ञान नाश का साधन बनकर
दुनियां को टुकड़े–टुकड़े में बांट रहा है
कुद्ध ुध्द के कुर पावड़ी
बिछे हुये हैं
साधी हुई संगीन
अतल में ढेर बमों में दबे हुये हैं
प्रकृति जीत ली,
अणु के भेदों को पहिचाना
किंतु शक्ति में मद बहकर
सत्य–न्याय का मर्म न जाना।

वर्तमान समय में मनुष्य ने ज्ञान विज्ञान के सहारे प्रकृति के सारे रहस्यों को जान लिया है। अणु के प्रत्येक कण के भेदों को पहचान कर परख लिया है। परंतु मनुष्य का हदयेश मर चुका है और वह विनाश के पथ की ओर बढ़ता ही जा रहा है।

वहीं दूसरी ओर बोड़ो कवि कमल कुमार ब्रहम जी अपनी कविता अभिलाषा में लिखते हैं कि मानव अब बदल चुका है वह काफी दूर निकल गया है। कवि कहते है कि मानव के लिए इस पृथ्वी पर फिर से एक शांत गगन का निर्माण करना होगा। जिसमें वह पुनः चिर स्थायी रूप से निवास कर सके।

मानव हेतु
चिरस्थायी रास्ता निकालना होगा
पृथ्वी के रमणीय वक्ष पर
शांत मन से रहने
घन अभिलाषा है मेरी
शरत काल के शीत हवाओं नें
खिले सुंदर फूलों से
जीवन मिठा सा संदेश दिया है
प्रकृति के ह्रदय में
पक्षियों की मधुर तानें
रस घोल देती हैं, मेरे ह्रदय पर भी

जिस प्रकार एक भिक्षुक कई जगहों का भ्रमण कर अंजान प्रांत में आ जाता हैं जहां वह किसी को नहीं जानता और ना ही पहचानता फिर भी वह प्रेम की तलाश में इधर उधर भटक फिर रहा है। ठीक इसी प्रकार एक आम आदमी भी इधर उधर भटककता फिरता है।

आदमी आम जिंदगी को जीने के लिये उसे कुछ लाभ नहीं मिलता सिवाय दुख के। आज का नया मनुष्य रूढ़िग्रस्त और उसका ह्रदयसंवेदनाओं से रिक्त हो चुका है। आज उसके पास कोरे अहंकार के सिवाय और कुछ नहीं है। कवि लिखते हैं कि–

बहुत पथ भ्रमण कर
पहुंचा तुम्हारे द्वार पर
सुना नहीं पहचानता भी नहीं
तुम्हारे प्रांत को
देखने की शक्ति नहीं नेत्रों में
अकेला छुपछाप झोला लेकर
भाइयों से प्रेम ढूढ़ता हुआ।
आवाज दो वंचित मत मरना मां
दो मुझे थोड़ा सा प्रेम मां
बहुत ही विशाल, बहुत ही वृहद
तुम्हारा यह वित्रित द्वार

कैसे आउ, कैसे खड़ा होउ
टूटे मन का उपाय नहीं पता
मिला नहीं सुख एक दिन के लिए भी
जानता हूं अनिश्चित संसार को
कांप उठता है दुर्बल मन मेरा
सूख जाती है हंसी सदैव होठों की
आती है मात्र अपूर्ण अभिलाषा दुख की।

बहुसंख्यक आदिवासी जातियां जो नई हवा को सूघंते हुए अपनी परम्परा में ग्रस्त है उनकी स्त्रियां भी खरीदी जा रही हैं। समानता और समता के प्रजातान्त्रिक मूल्य सुसंस्कृत समाज के लिए है। इसी समाज का स्वार्थ और तीव्र अहं इस प्रकिया को आगे बढ़ा रहा है। चंग्रकांत देवताले लिखते हैं–

अबके फिर मुर्ग पकगें
मंद और सल्फी की हाड़ी फूटेगी
मांदरी की साज पर
थिरकेगी वस्तर की लड़कियां

वहीं दूसरी ओर दिनेश कुशवाह अपनी कविता इसी काया में मोक्ष में संकलित लड़की और सोना शीर्षक कविता में लिखते हैं–

दुनिया में सिर्फ लड़की की आंख होती है
जहां चूजो की तरह जनमते हैं सपने
पलते हैं राजकुमार की तरह
और मुर्गे की तरह हलाला होते हैं।
लड़की सपने नहीं दुनिया पालती है
हरी–गुलाबी–लाल–बैगंनी
लड़की दर्पण नहीं सपना देखती है
अपने आंचल में छिपे दूध जैसा उजला सपना
सपने में भी शीशा टूटने और दूध फटने को
असगुन मानी है लड़की
और चटखती रहती है कांच की तरह।

यह सच है कि जिस देश का ढांचा जितना व्यवस्थित और नियोजित–सुनियोजित होगा, वहां के निवासियों का जीवन स्तर भी उतना ही श्रेष्ठ

और उंचा होता है। यहीं नहीं वहां का साहित्यिक और सांस्कृति स्तर भी उतना ही उंचा और श्रेष्ठ होता है।

मनुष्य का राग–विराग तथ द्वेष आज भी प्रायः वहीं है जो होमर तथा कालीदास के समय में था। यहीं कारण है कि हमें प्राचीन कवियों की रचनांए, उनके पात्र तथा वर्णन प्रकार आज भी सच्चे प्रतीत होते हैं।

पाद टिप्पणी–

1. गजल (हिन्दी गजल), दुष्यंत कुमार।

2. रोटी और संसद (हिंदी गजल) धूमिल।

3. गजल (हिन्दी गजल), दुष्यंत कुमार।

4. अपना घर फूंकन का विकल्प आज भी खुला है – डा0 दिनेश कुशवाह

5. चुनाव– रूपालि सायेगियारी। अनुवादकः किशोर कुमार जैन।

6. वही।

7. समकालीन कविता के विधि संदर्भ– डा0 राहुल।

8. ज्ञान पिपासा– राजेन्द्र रघुवंशी

9. अभिलाषा– कमल कुमार ब्रम। अनुवादक–स्वयं शोधकर्ता

10. भिक्षुक– कमल कुमार ब्रहम। अनुवादक–स्वयं शोधकर्ता

11. वही

12. वही

13. लड़की और सोना– डा0 दिनेश कुशवाह।

संदर्भ ग्रंथ

1. बली, तारकनाथ, आलोचना प्रकृति और परिवेश, द्वितीय संस्करण–1992, प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दरियागंज, दिल्ली।

2. पाण्डेय, डा0 रतन कुमार, समाकलीन कविता सम्मेलन और अभिव्यक्ति, संस्करण–2006, प्रकाशकः संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

3. कार्तिकेय, डा0 महेन्द्र, आधुनिक कविता के नये मूल्य, संस्करण–1998, प्रकाशक विद्या प्रकाशक मन्दिर, नई दिल्ली।

4. सिंह, डा0 कन्हैया औ पांडेय, डा0 सरेश चन्द्र, समकालीन कविता, संस्करण–1993, प्रकाशकः विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

5. डा0 राहुल, समकालीन कविताः विविध संदर्भ, प्रकाशकः 39/1, हिंदुस्तान टाइम्स अर्पाटमेंटस भवन, 5 इंस्टीटयूश्नल एरिया, फेज–11, दिल्ली।

6. पांडेय, मैनेजर, मैनेजर पांडेय, संकलित निबंध, संस्करण 2005, प्रकाशकः नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नेहरू भवन 5, इंस्टीटयूशनल एरिया, फेज 11, दिल्ली।

7. गुप्त, गणपतिचन्द्र, हिन्दी काव्य का इतिहास, संस्करण 2007 प्राकशकः लोकभारती प्रकाशन, दरबरी बिन्डिंग, एम0जी0के0 रोड, इलाहाबाद।

8. दुबे, अभय कुमार, भारत का भूमण्डीकरण, संस्करण–2006, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन, 21 ए, दरियागंज, दिल्ली।

9. दुबे, अभय कुमार, भारत का भूमण्डीकरण, संस्करण–2007, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन, 21 ए, दरियागंज, दिल्ली।

बोड़ो

10. भारद्वाज, डा0 रमेश, अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, संस्करण 2004, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा सनिनधि, राजघाट, दिल्ली।

11. Bodo Literature, collection from internet, Googel search.

12. बोड़ो, मधुराम, संपादक, बोडत्रो साहित्य का इतिहास, एन0एल0 पब्लिकेशन्स, ए0आ0बी0रोड, पानबजार, गुवाहाटी।

13. ब्रहम, स्व0 प्रमोदचन्द्र, संपादक बोड़ो अंग्रेजी हिंदी शब्दकोष, उनसोमई लाइब्रेरी, आर0एन0बी0 रोड कोकराझार, असम।